Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ
فِدْيَةٌ طَعَامُ
مِسْكِيْنٍ ○

(सूरः बकरः , आयत : 185)

अनुवाद: और जो लोग इसकी ताकत रखते हों उनपर फ़िद्या एक मिस्कीन को खाना खिलाना है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 16
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

18 शवाल , 1446 हिज्री कमरी, 17 शहादत 1404 हिज्री शम्सी, 17 अप्रैल 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

हर चीज़ केवल खुदा तआला से ही माँगनी चाहिए। खुदा तआला तो सर्वशक्तिमान है, यदि वह चाहे तो अत्यंत दुर्बल व्यक्ति को भी रोज़ा रखने की शक्ति प्रदान कर सकता है।

जब मैंने छह महीने तक रोज़े रखे थे, तो एक बार मुझे एक नबियों के समूह का दर्शन हुआ। उन्होंने कहा, "तुमने अपने नफ्स को इतनी कठिनाई में क्यों डाला हुआ है? इससे बाहर निकलो।" इसी प्रकार जब मनुष्य स्वयं को खुदा तआला के लिए कठिनाइयों में डालता है, तो वह माता-पिता की तरह दया करके कहता है, "तुम क्यों इस कष्ट में पड़े हो?"

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

फिद्या का उद्देश्य

एक बार मेरे दिल में ख्याल आया कि फिद्या किस लिए निर्धारित किया गया है। तब मुझे समझ आया कि यह सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए है, ताकि रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ इससे हासिल हो सके। खुदा तआला ही वह सत्ता है जो सामर्थ्य प्रदान करता है, और हर चीज़ केवल खुदा तआला से ही माँगनी चाहिए। खुदा तआला तो सर्वशक्तिमान है, यदि वह चाहे तो अत्यंत दुर्बल व्यक्ति को भी रोज़ा रखने की शक्ति दे सकता है। अतः फिद्या का उद्देश्य यही है कि उस शक्ति को प्राप्त किया जा सके, और यह केवल खुदा तआला की कृपा से संभव है। इसलिए मेरे विचार में यह उत्तम है कि मनुष्य यह प्रार्थना करे: "हे खुदा तआला, यह तेरा एक पवित्र महीना है, और मैं इससे वंचित रह रहा हूँ। कौन जानता है कि मैं अगले वर्ष जीवित रहूँगा या नहीं, या अपने छोड़े हुए रोज़ों को पूरा कर सकूँगा या नहीं?" यदि वह खुदा तआला से तौफ़ीक़ माँगे, तो मुझे विश्वास है कि ऐसे व्यक्ति को खुदा तआला अवश्य सामर्थ्य प्रदान करेगा।

रोज़े की अनिवार्यता यदि खुदा तआला चाहता, तो इस उम्मत पर किसी प्रकार की पाबंदी न लगाता, जैसे कि पिछली उम्मतों में कई मामलों में रियायत दी गई थी। लेकिन उसने ये बंधन भलाई के लिए रखे हैं। मेरे विचार में, मूल बात यही है कि जब कोई व्यक्ति पूर्ण सच्चाई और निष्कपटता से खुदा तआला से प्रार्थना करता है कि "मुझे इस महीने से वंचित न रख," तो खुदा तआला उसे वंचित नहीं रखता। यदि किसी व्यक्ति को रमज़ान के महीने में बीमारी आ जाए, तो यह बीमारी उसके लिए रहमत बन जाती है, क्योंकि हर अमल का आधार नीयत पर होता है।

एक सच्चे आस्तिक को अपने पूरे अस्तित्व से स्वयं को खुदा तआला की राह में समर्पित कर देना चाहिए। जो व्यक्ति रोज़े से वंचित रह जाता है, लेकिन उसके दिल में गहरी इच्छा और दर्द है कि "काश मैं स्वस्थ होता और रोज़ा रखता," और उसका दिल इस पीड़ा से रोता है, तो फ़रिश्ते उसके लिए रोज़े रखते हैं, बशर्ते कि उसकी कोई बनावटी बहाना न हो। खुदा तआला उसे कभी भी सवाब से वंचित नहीं रखेगा।

यह एक सूक्ष्म विषय है कि यदि कोई व्यक्ति (अपने आलस्य के कारण) रोज़े को कठिन मानता है और यह सोचता है कि "मैं बीमार हूँ, मेरी सेहत ऐसी है कि यदि मैं एक वक्त खाना न खाऊँ, तो मुझे ये-ये दिक़्क़तें होंगी," तो ऐसा व्यक्ति जो खुदा तआला की दी हुई नेमत को स्वयं पर बोझ समझता है, वह इस पुण्य का हक़दार कैसे हो सकता है? हाँ, वह व्यक्ति जिसका दिल रमज़ान के आगमन से प्रसन्न होता है, जो इसकी प्रतीक्षा करता है कि "रमज़ान आए और मैं रोज़ा रखूँ," और फिर बीमारी के कारण रोज़ा नहीं रख पाता, तो वह स्वर्ग में रोज़े से वंचित नहीं होगा।

इस दुनिया में बहुत से लोग बहानेबाज़ होते हैं। वे सोचते हैं कि जिस तरह वे दुनिया वालों को धोखा दे सकते हैं, वैसे ही खुदा तआला को भी धोखा दे सकते हैं। बहाना बनाने वाले लोग अपने स्वयं के विचारों से धर्म के

शेष पृष्ठ 12 पर

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला बड़ा ही लज्जा वाला, बड़ा ही करीम और सख़ी है। जब बंदा उसके सामने दोनों हाथ उठाता है, तो वह उन्हें खाली और निराश लौटाने से शर्माता है। (हदीस)

रमज़ान में इबादतों की तरफ़ ध्यान देने की शिक्षा अल्लाह तआला ने इसलिए दी है कि फिर तुम इसे अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बना लो। अगर ऐसा नहीं किया, तो सिर्फ़ रमज़ान की इबादतें कोई काम न देंगी।

अल्लाह तआला के इश्क़ में केवल फ़ायदा ही फ़ायदा है, क्योंकि वह हर भलाई का स्रोत है, हर बुराई से बचाने वाला है, हर तकलीफ़ से निजात देने वाला है। वह कहता है, "मुझसे माँगो, तुम दुआ करो, मैं तुम्हें जवाब दूँगा।" और सच्चा आशिक़ तो अल्लाह तआला का क़ुर्ब (निकटता) माँगता है। इसलिए हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला के क़ुर्ब की तलब करें।

सबसे बड़ी चीज़ यही है कि अल्लाह तआला से उसकी रहमत और शफ़क़त माँगो और उसके हुक्मों पर अमल करने की कोशिश करो।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उन लोगों की दुआएँ सुनता है जो जल्दबाज़ी और बेसब्री नहीं दिखाते।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "तुममें से जिस किसी के लिए दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया, तो मानो उसके लिए रहमत के दरवाज़े खोल दिए गए।" और जो चीज़ अल्लाह तआला से माँगी जाती है, उसमें सबसे अधिक पसंदीदा चीज़ 'आफ़ियत' (सुरक्षा व सलामती) की माँग है।

इस रमज़ान में हमें यह पक्का इरादा करना चाहिए कि हम अपनी इबादतों को ज़िंदा करेंगे और फिर इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ भी माँगेंगे कि वह हमें इस संकल्प को पूरा करने की तौफ़ीक़ दे। और फिर पूरी कोशिश से इसे पूरा करने के लिए अपनी तमाम ताक़तों को इस्तेमाल करने की भी भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "जो व्यक्ति यह चाहता है कि तकलीफ़ के समय अल्लाह तआला उसकी दुआ क़बूल करे, उसे चाहिए कि वह आसानी और आराम के समय कसरत से दुआ करे।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अपने बंदे के गुमान के अनुसार उसके साथ सुलूक करता हूँ। जब मेरा बंदा मुझे याद करता है, मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वह मुझे अपने दिल में याद करेगा, तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करूँगा। अगर वह किसी सभा में मेरा ज़िक्र करेगा, तो मैं उससे बेहतर सभा में उसका ज़िक्र करूँगा। अगर वह मेरी तरफ़ एक बालिश्त आएगा, तो मैं उसकी तरफ़ एक हाथ जाऊँगा। अगर वह मेरी तरफ़ एक हाथ आएगा, तो मैं उसकी तरफ़ दो हाथ जाऊँगा। अगर वह मेरी तरफ़ चलकर आएगा, तो मैं उसकी तरफ़ दौड़कर जाऊँगा।"

"मैं तुम्हें यह समझाना चाहता हूँ कि जो लोग मुसीबत आने से पहले दुआ करते हैं, इस्तिग़फ़ार करते हैं और सदक़ा देते हैं, अल्लाह तआला उन पर रहमत करता है और उन्हें अपने अज़ाब से बचा लेता है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हमें अल्लाह तआला से यह दुआ करनी चाहिए कि वह हमें ज़ालिमों से निजात दे और उनसे इंतेक़ाम ले। जो हमसे दुश्मनी रखते हैं, तू ही हमारे ख़िलाफ़ उनकी सज़ा का इंतेज़ाम कर। और जब हम रमज़ान में इस तरह दुआ करेंगे, तो अल्लाह तआला एक अज़ीम इंक़लाब पैदा करेगा। फिर हम देखेंगे कि चाहे वह पाकिस्तान का कोई मौलवी हो, कोई ताक़तवर इंसान हो, या किसी और हुकूमत का कोई ताक़तवर व्यक्ति हो, वह कभी हमें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। अगर हम ख़ालिस दिल से अल्लाह तआला की तरफ़ झुकेंगे, तो अल्लाह तआला हमारी मदद को आएगा, हमारी हिफ़ाज़त करेगा और सच्चे दोस्त की तरह हमारा सहारा बनेगा।

क़ुरआन, हदीस-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फ़रमानों की रोशनी में दुआओं की अहमियत का रूहानी बयान, साथ ही रमज़ानुल मुबारक के हवाले से जमाअत के लोगों के लिए सुनहरी नसीहतें

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07 मार्च 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मेरे बंदे तुझसे मेरे बारे में पूछें, तो निश्चय ही मैं क़रीब हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ क़बूल करता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। इसलिए चाहिए कि वे भी मेरी बात को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ।

रमज़ान शुरू होते ही दिल में तुरंत यह ख़याल पैदा हो जाता है कि नमाज़ों की तरफ़ ध्यान दिया जाए क्योंकि यह बरकतों से भरा महीना है। इसमें दुआएँ क़बूल होती हैं। इसलिए आमतौर पर लोग मस्जिदों की ओर अधिक रुख़ करते हैं। मस्जिदों में हाज़िरी भी बढ़ जाती है, चाहे वह फ़ज्र की नमाज़ हो या इशा की। आम दिनों में फ़ज्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ में उतनी हाज़िरी नहीं होती जितनी रमज़ान में हो जाती है। यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि कम से कम इन दिनों में लोगों को यह एहसास हो जाता है कि हमें मस्जिद की तरफ़ जाना चाहिए और अल्लाह तआला से उसका फ़ज़ल

माँगना चाहिए।

इसकी एक वजह यह भी है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि "मैं रमज़ान के दिनों में जहन्नम के दरवाज़े बंद कर देता हूँ, शैतान को जकड़ देता हूँ और जन्नत के दरवाज़े खोल देता हूँ।"

(बुख़ारी, किताब बदअल-ख़ल्क़, बाब सिफ़त इब्लीस व जुनूदिही, हदीस 3277)

लेकिन लोग सिर्फ़ यह समझते हैं कि शायद रमज़ान में ही इबादतों की ज़रूरत है और इसी में की गई दुआएँ और इबादतें हमारी बख़्शिश का सामान बना देंगी। ग़ैर-अहमदी चैनलों और इस्लामी देशों के चैनलों में भी यह हदीस बार-बार दोहराई जाती है, जबकि यह ग़लत सोच है।

रमज़ान में इबादत की तरफ़ ध्यान देने की शिक्षा अल्लाह तआला ने इसलिए दी है ताकि तुम इसे अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बना लो। अगर ऐसा नहीं किया तो सिर्फ़ रमज़ान की इबादतें कोई फ़ायदा नहीं देंगी, बल्कि अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "तुमने सिर्फ़ एक महीने की इबादत की, बाक़ी ग्यारह महीने क्या किया?" इसलिए इस ग़लतफ़हमी को अपने अंदर से निकाल देना चाहिए कि सिर्फ़ रमज़ान की नमाज़ें पढ़ लेना और मस्जिदों को आबाद कर देना काफ़ी है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि "जो व्यक्ति ईमान के तक़ाज़े और सवाब की नीयत से रमज़ान की रातों में उठकर नमाज़ पढ़ता है, उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।"

(बुख़ारी, किताब अस-सौम, बाब मन सा'मा रमज़ान इमानन ..., हदीस 1901)

बेशक, यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का फ़रमान है। अब यह सोच हो सकती है कि अगर इंसान हमेशा अपनी ज़िंदगी में नेकियों को शामिल करने की कोशिश करे और नमाज़ों, तहज्जुद और नवाफ़िल की तरफ़ ध्यान दे, तो रमज़ान में उसकी इबादत का स्तर और ऊँचा होगा। जो लोग नियमित रूप से इबादत करते हैं, वे इसी सोच के साथ यह अमल करते हैं। लेकिन कुछ लोग यह समझते हैं कि बस रमज़ान में ही रातों को उठ जाना काफ़ी है।

इंसान ग़लतियों का पुतला है, उससे ग़लतियाँ होती हैं, लेकिन अल्लाह तआला भी बड़ा रहमान और रहीम है। वह बख़्शने वाला है, इसलिए उसने हमें यह मौक़ा दिया है कि अगर साल के दौरान तुमसे ग़लतियाँ हो गई हैं, तो अब नए सिरे से यह संकल्प करो और फिर इस पर क़ायम रहने की कोशिश करो कि तुम आगे चलकर अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करोगे और उन तमाम नेकियों को अपनाओगे जिनका अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है।

इसलिए एक मुसलमान को ख़ास तौर पर यह याद रखना चाहिए कि रमज़ान की इबादत का जो हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है, वह इसलिए दिया है ताकि तुम्हारे अंदर रुश्द और हिदायत पैदा हो। और रुश्द (बुद्धिमत्ता) सिर्फ़ एक महीने के लिए नहीं होती, बल्कि यह एक स्थायी चीज़ है। अल्लाह तआला हर साल रमज़ान को इसलिए लाता है ताकि भटके हुए इंसान को उसके कर्तव्यों की याद आ जाए, हक़ूक़ुल्लाह (अल्लाह के हक़) भी याद आ जाएँ और हक़ूक़ुल-इबाद (बंदों के हक़) भी। फिर वह देखे कि अल्लाह तआला और बंदों के हक़ किस तरह अदा कर सकता है।

जब अल्लाह तआला यह फ़रमाता है कि "सअलक इबादी" (जब मेरे बंदे पूछें), तो यहाँ 'मेरे बंदे' से मुराद अल्लाह के सच्चे आशिक़ हैं। और कोई भी सच्चा आशिक़ ऐसा नहीं होता कि वह साल के ग्यारह महीने अपने महबूब से बेपरवाह रहे और सिर्फ़ एक महीने उसमें मग्न हो जाए।

सच्चे आशिक़ अपने महबूब की हर बात मानते हैं। दुनियावी आशिक़ तो ऐसे होते हैं जिनके महबूब में कई बुराइयाँ भी होती हैं, जिनसे नुक़सान भी हो सकता है। लेकिन अल्लाह तआला का इश्क़ ऐसा है जिसमें सिर्फ़ फ़ायदा ही फ़ायदा है। वह हर भलाई का स्रोत है, हर बुराई से बचाने वाला है, हर तकलीफ़ से निजात देने वाला है।

वह कहता है, "मुझसे माँगो, तुम दुआ करो, मैं तुम्हें जवाब दूँगा।" और सच्चा आशिक़ तो अल्लाह तआला का क़ुर्ब माँगता है। इसलिए हमें भी यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करने की कोशिश करें। अपनी इबादतों में और रमज़ान की इबादतों में सिर्फ़ दुनियावी फ़ायदे के लिए दुआ न करें, बल्किअपने महबूब (अल्लाह) का क़ुर्ब माँगें।

उससे यह दुआ करें कि "ऐ अल्लाह! हमें अपना क़ुर्ब अता फ़रमा, हमें मक़बूल दुआओं की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, हमें लिक़ा (तेरी साक्षात्कार की अनुभूति) अता फ़रमा, हमारे रोज़ों को क़ुबूल फ़रमा।" और जब यह होगा, तो रमज़ान के बाद भी कोई बुराई नहीं होगी, बल्कि नेकियों की तौफ़ीक़ मिलती रहेगी।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में बार-बार तवज्जो दिलाई है कि हक़ूक़ुल्लाह (अल्लाह के हक़) और हक़ूक़ुल-इबाद (बंदों के हक़) क्या हैं। हमें इन्हें पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "क़ुरआन-ए-करीम में सात सौ हुक्म दिए गए हैं।"

(कश्ती-ए-नूह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 19, पृष्ठ 26)

रमज़ान में ख़ास तौर पर क़ुरआन पढ़ने की तवज्जो दिलाई गई है। जब हम इसे पढ़ेंगे, तो उन हुक्मों को भी तलाश करेंगे जो अल्लाह तआला ने हमें दिए हैं। बल्कि एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सात सौ से भी अधिक हुक्म बताए हैं।

जब इन हुक्मों की तलाश करेंगे, तो हम उन पर अमल करने की कोशिश करेंगे। और यही एक सच्चे आशिक़ का काम है कि वह अपने महबूब की बातों को मानने के लिए हर संभव कोशिश करे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है, "मेरे बंदों से कहो कि मुझ पर ईमान लाएँ ताकि हिदायत पाएँ।" और मुकम्मल ईमान यह है कि अल्लाह और उसके रसूल की सच्ची इताअत की जाए।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ईमान और अच्छे कर्म साथ-साथ चलते हैं। इसलिए इस आयत में यह भी लिखा है कि मेरी बात को स्वीकार करो। इसका अर्थ यह है कि अच्छे कर्म करो, नेक काम करो, और भलाई पर कायम रहो। जब इबादत करते हुए दुआएँ मांगोगे, तो फिर अल्लाह फरमाता है कि मैं तुम्हारा दोस्त बन जाऊँगा, जैसा कि दूसरी जगह फ़रमाया है :

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

(अल-बक़रा: 258) अर्थात, अल्लाह उन लोगों का दोस्त है जो ईमान लाते हैं। और जब अल्लाह का दोस्त बनोगे, तो यह दोस्ती तुम्हें उसके करीब करती जाएगी, इसमें लगातार तरक्की होती चली जाएगी। यह कोई ऐसा रिश्ता नहीं जो एक जगह ठहर जाए, बल्कि यह बढ़ता ही चला जाता है और अल्लाह तुम्हारी दुआओं को भी सुनेगा।

इसलिए रमज़ान में इस मक़ाम को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन अगर रमज़ान के बाद हम इस मक़ाम से पीछे हट गए और इबादतों को उसी तरह नहीं निभाया जैसे रमज़ान में निभाते रहे, तो फिर अल्लाह हमारा दोस्त कैसे बनेगा? अल्लाह का दोस्त बनने के लिए कुछ शर्तें हैं, दुआओं की कबूलियत के लिए भी कुछ शर्तें हैं।

सबसे पहली बात यह है कि हमें पूरी तरह से अल्लाह का बंदा बनना होगा, और पूरी तरह से उसकी इबादत करनी होगी। हमें यह मानना होगा कि वही तमाम ताकतों का असली स्रोत है और हमें कोई झूठे खुदा नहीं बनाने चाहिए। किसी को भी अपनी ज़रूरतों या मकसद के लिए अनजाने में अपना खुदा नहीं मान लेना चाहिए, क्योंकि यह शिर्क की तरफ़ ले जाता है। हाल ही में जर्मनी के सिक्योरिटी अफसरों से मेरी मुलाकात हुई, उन्होंने सवाल किया कि वे अपने अफसरों को कैसे खुश करें? तो मैंने कहा कि जो भी काम करो, वह अल्लाह को राज़ी करने के लिए करो। जब अल्लाह को राज़ी करने के लिए काम करोगे, तो अल्लाह खुद अफसरों के दिलों को मोड़ देगा और वे तुम्हारी

भलाई के इंतज़ाम करेंगे। लेकिन सबसे बड़ी बात यही है कि अल्लाह से उसकी रहमत और करम मांगो और उसके आदेशों का पालन करो।

अब हम हज़रत चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब (रज़ियल्लाहु अन्हु) की मिसाल देते हैं कि एक बार जब वे ब्रिटिश महारानी के दरबार में बैठे थे, तो बार--बार घड़ी देखने लगे। अफसरों ने पूछा कि इसकी क्या वजह है? तो उन्होंने जवाब दिया कि मेरी इबादत का वक़्त हो रहा है और मैं इबादत को टाल नहीं सकता। यह अल्लाह का हुक्म है जिसे मुझे पूरा करना है। यह सुनकर, वहां के अधिकारियों ने उनके लिए इबादत का इंतज़ाम कर दिया।

(माहनामा खालिद, रब्वा, दिसंबर 1985 - जनवरी 1986, पृष्ठ 89)

यही वह हिम्मत और ईमान का स्तर है जो हर मोमिन को अपनाना चाहिए।

नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हमें नेकियों की तरफ़ बुलाने के लिए बहुत सी हदीसें बयान की हैं। हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने इस ज़माने में नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सच्चे गुलाम होने का हक अदा किया और हमें नेकियों की तरफ़ ध्यान दिलाया। आपकी शर्ते बैअत में भी ज़्यादातर यही हैं कि हक़ूक़ुल्लाह और हक़ूक़ुल इबाद का ख़याल रखा जाए। जब हम इन चीज़ों पर अमल करेंगे, तब अल्लाह हमारा दोस्त बन जाएगा, हमारी दुआओं को सुनेगा और हमें अपने क़रीब करेगा।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह उन लोगों की दुआ कबूल करता है जो बेसब्री नहीं दिखाते।

(मुस्लिम, किताबुज़-ज़िक्र व दुआ, हदीस 6936)

इसका मतलब यह है कि जो यह नहीं कहते कि "मैंने बहुत दुआएँ कर लीं, लेकिन अल्लाह ने सुना नहीं।" यह एक तरह से कुफ़्र है और ईमान से दूर ले जाने वाली बात है। एक सच्चे मोमिन को इससे हमेशा बचना चाहिए।

कुछ लोग मुझसे भी लिखकर कहते हैं कि हमने बहुत दुआएँ कीं, मगर पूरी नहीं हुईं। असल बात यह है कि उन्होंने अपनी दुआओं में अल्लाह का क़ुर्ब पाने की कोशिश ही नहीं की, बल्कि वे सिर्फ़ दुनिया के मसलों के हल के लिए दुआ कर रहे थे। जब हम सिर्फ़ अपनी दुनिया के लिए अल्लाह के करीब जाएंगे, तो अल्लाह ऐसी दुआओं को क्यों सुनेगा? दोस्ती का हक़ तो तब अदा होता है जब हर हाल में दोस्ती निभाई जाए। अल्लाह का हक़ तब अदा होता है जब हर हाल में उसकी बंदगी की जाए, तभी वह हमारी दुआएँ सुनेगा।

इसलिए हमेशा याद रखना चाहिए कि हमें केवल अपने फायदे के लिए नहीं, बल्कि अल्लाह का क़ुर्ब पाने के लिए भी दुआ करनी चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो अल्लाह हमारी दुआएँ ज़रूर सुनेगा, क्योंकि वह खुद फ़रमाता है कि वह अपने बंदों को जवाब देता है। हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि अल्लाह और बंदे का रिश्ता दो दोस्तों की तरह होता है। कभी दोस्त अपने दोस्त की बात मान लेता है, और कभी उससे अपनी बात मनवाता है। इसी तरह अल्लाह भी करता है। कभी वह हमारी दुआ कबूल कर लेता है, और कभी हमारी भलाई के लिए उसे टाल देता है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3, पृष्ठ 386, एडिशन 1984)

यह वही भाव है जो हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया है, क्योंकि यह कहना कि मैंने दुआ की, तो सबसे पहली बात यह है कि दुआ सिर्फ़ उस समय की गई जब दुनिया के मकसद थे। दीन की ख़ातिर, उसकी बेहतरी और उसकी तरक्की के लिए, अल्लाह का क़ुर्ब पाने के लिए कोई दुआ नहीं की गई। और अगर कोई मोमिन है और उसकी भी कभी-कभी दुआएँ कबूल नहीं होतीं, तो आपने फ़रमाया कि यह दोस्ती का मामला है—कभी मान ली जाती है और कभी नहीं। और जो दुआ मंज़ूर नहीं की जाती, उसमें भी अल्लाह अपने दोस्त के भले का इंतज़ाम करता है। कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जिन्हें वह मंज़ूर नहीं करता, लेकिन उसके बदले में किसी और तरीके से इनाम दे देता है।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) एक जगह फ़रमाते हैं कि जब मेरे बंदे मुझसे मेरे वजूद की दलील पूछते हैं, तो इसका जवाब यह है कि मैं बहुत क़रीब हूँ। अर्थात इसके लिए किसी बड़ी दलील की ज़रूरत नहीं है। मेरा वजूद क़रीबी तरीक़े से समझा जा सकता है, और बहुत आसानी से मेरी हस्ती पर दलील मिल जाती है। और यह दलील यह है कि जब कोई मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी सुनता हूँ और अपने वह्यी इशारों से उसेसफलता की बशारत देता हूँ। इससे न सिर्फ़ मेरी मौजूदगी पर यक़ीन आता है, बल्कि मेरे क़ादिर होने पर भी पूरा यक़ीन हासिल होता है। जब अल्लाह सुनता है, तो वह जवाब भी देता है।

हमारे "रीव्यू ऑफ़ रिलीजियंस" वाले कई सालों से God Summit कर रहे हैं। उन्होंने अलग-अलग समय पर इसे आयोजित किया है। इस साल भी उन्होंने इसे किया और इसमें लोगों ने अपनी दुआओं की कबूलियत के किस्से सुनाए। उन्होंने बताया कि कैसे अल्लाह ने उनकी दुआओं को सुना और कैसे उनकी दुआओं की कबूलियत ने उन्हें अल्लाह की मौजूदगी पर यक़ीन दिलाया। लेकिन इसकी एक शर्त है। आपने फ़रमाया कि लोगों को चाहिए कि वे ऐसी हालत में तक़वा और खुदा-तरसी पैदा करें ताकि अल्लाह उनकी आवाज़ सुने।

अल्लाह फ़रमाता है कि तक़वा और खुदा-तरसी पैदा करो ताकि मैं तुम्हारी आवाज़ सुनूं। आपने फ़रमाया कि अल्लाह यह नहीं कहता कि वह यूं ही सबकी सुन लेगा। बल्कि उसने यह शर्त रखी है कि तक़वा और खुदा-तरसी की हालत पैदा करो, तब वह सुनेगा। अगर अल्लाह को अपनी आवाज़ सुनवानी है, तो यह हालत अपनानी होगी। फिर आपने फ़रमाया कि इंसान को चाहिए कि वह मुझ पर ईमान लाए। आपने इस आयत की व्याख्या करते हुए बताया कि इससे पहले कि उसे मुकम्मल मारिफ़त मिले, उसे इस बात का इकरार करना चाहिए कि अल्लाह मौजूद है और वह तमाम ताक़तों और क़ुदरतों का मालिक है। क्योंकि जो ईमान लाता है, उसे मारिफ़त दी जाती है।

अब इस आयत में अल्लाह फ़रमाता है : فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي अर्थात "उन्हें मेरी बात माननी चाहिए और मुझ पर ईमान लाना चाहिए।" यह आदेश अल्लाह अपने उन बंदों को दे रहा है जो असली मोमिन हैं, जो सच्चे बंदे हैं। कभी-कभी, जैसा कि पहले भी कहा गया, इंसान में कमज़ोरी आ जाती है, तब उसे अल्लाह के करीब जाकर अपने ईमान को मजबूत करना चाहिए। और जब वह यह करेगा, तो अल्लाह, जो सारी ताक़तों का मालिक है, उसके ईमान को तरक्की देता रहेगा। जब अल्लाह देखेगा कि उसका बंदा उसके करीब आने की कोशिश कर रहा है, तो वह उसके ईमान को और बढ़ाएगा।

फिर आपने फ़रमाया कि जब इंसान को मारिफ़त दी जाती है, तभी वह उस हालत में आता है कि उसकी दुआएँ सुनी जाती हैं और वह अल्लाह की हक़ीक़त को पहचानता है। और अगर कभी कोई दुआ कबूल नहीं होती, तो अल्लाह उसके दिल को ऐसी तसल्ली दे देता है कि उसे यह ख़याल भी नहीं आता कि उसकी दुआ नहीं सुनी गई। बल्कि उसके दिल में यह इत्मिनान रहता है कि अल्लाह किसी और तरह से उसकी ज़रूरतों को पूरा कर देगा। आपने यह भी फ़रमाया कि इंसान में खुदा-तरसी होनी चाहिए, वह अल्लाह के हक़ भी अदा करे और उसके बंदों के हक़ भी। यही खुदा-तरसी है। तब अल्लाह फरमाता है कि मैं तुम्हारी दुआ सुनूंगा। और फिर इंसान को अपने ईमान और यक़ीन में बढ़ते ही जाना चाहिए। एक तरह का मारिफ़त पैदा होता है और फिर उसमें भी इज़ाफ़ा होता चला जाता है, और मुकम्मल मारिफ़त हासिल होतीचली जाती है।

(माख़ूज़: "अय्यामुस्सुल्ह", रूहानी ख़ज़ायन, भाग 14, पृष्ठ 260-261)

फिर क़ुरआन-ए-करीम में आता है: "يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ" अर्थात "वह ग़ैब पर ईमान लाते हैं।" हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने इसकी बहुत सुंदर व्याख्या की है। एक जगह फ़रमाया कि "ग़ैब भी अल्लाह का ही नाम है।"

(माख़ूज़: "मल्फ़ूज़ात", भाग 10, पृष्ठ 11, एडिशन 2022)

हर दुआ से पहले यह यक़ीन होना चाहिए कि अल्लाह मौजूद है और वह असीम गुणों का मालिक है। वह तमाम ताक़तों और कुदरतों का स्वामी है। जब इस यक़ीन के साथ अल्लाह की तरफ़ बढ़ोगे, उसके आगे झुकोगे, उससे दुआ करोगे, तो फिर तुम्हें अल्लाह की पूरी पहचान होगी, उसे जानने का बोध प्राप्त होगा और दुआ की स्वीकार्यता के चिह्न भी देखने को मिलेंगे। बहुत से लोग अल्लाह के फ़ज़ल से इसे देखते हैं और कुछ अपने अनुभव भी साझा करते हैं, जैसा कि मैंने पहले कहा कि God Summit में कई लोगों ने अपने अनुभव बयान किए और इससे उनका ईमान और भी मजबूत हुआ।

लेकिन यह नहीं होना चाहिए कि ज़ुबान से तो कह दिया कि हम अल्लाह की हस्ती पर पूरा यक़ीन और ईमान रखते हैं, मगर उसके आदेशों का पालन न करें। ऐसा न हो कि साल भर में बस रमज़ान के महीने में ही नमाज़ पढ़ने की कोशिश करें, जिस तरह इन दिनों मस्जिदें भरी रहती हैं। ये मस्जिदें हमेशा भरी रहनी चाहिएँ। अल्लाह का फ़ज़ल है कि अहमदी नमाज़ों की तरफ़ ख़ास तवज्जो देते हैं, लेकिन जहाँ कहीं भी कमज़ोरी हो, उसे दूर करने पर ध्यान देना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि यह रमज़ान हमारे इबादत के स्तर को ऊँचा उठाने वाला साबित हो, हमें अल्लाह का क़ुर्ब दिलाने वाला हो, ताकि हम अल्लाह के सच्चे बंदे बन जाएँ, उसकी बातों को मानने वाले बनें और फिर इसके नतीजे में अल्लाह हमारी दुआओं को भी क़ुबूल फ़रमाए।

इसलिए इस रमज़ान में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी इबादतों को ज़िंदा करेंगे और फिर इसके लिए अल्लाह से दुआ भी करेंगे कि वह हमें इस संकल्प को पूरा करने की तौफ़ीक़ दे। फिर हमें अपनी पूरी ताक़त से इसे पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। जब यह कोशिश होगी और हम अपनी तमाम शक्तियाँ इसी में लगाएंगे, तो फिर अल्लाह से ऐसा क़रीबी रिश्ता बन जाएगा कि वह हमारा दोस्त बन जाएगा। जैसा कि उसने कहा है कि "मैं उनका वली (रखवाला) बन जाता हूँ जो मेरी बात मानते हैं।"

हज़रत इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

"तुम में से जिस किसी के लिए दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया, तो उसके लिए रहमत के दरवाज़े खोल दिए गए। और अल्लाह से जो चीज़ माँगी जाती है, उसमें सबसे ज़्यादा पसंदीदा चीज़ उसकी तरफ़ से 'आफ़ियत' (सलामती) माँगना है।"

(जामे तिर्मिज़ी, किताब अद-दआवात, बाब: मन फतिह लहू मिनकुम बाबुद-दुआ, हदीस 3548)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

"दुआ उस मुसीबत के मुक़ाबले में भी फ़ायदा देती है जो आ चुकी है, और उस मुसीबत के मुक़ाबले में भी जो अभी आई नहीं है। ऐ अल्लाह के बंदों! तुम पर यह लाज़िम है कि दुआ करने को अपना उसूल बना लो।"

अब यह तो नहीं है कि मुश्किलें सिर्फ़ रमज़ान के दिनों में आती हैं। मुश्किलें और परेशानियाँ तो हर समय आती रहती हैं। इसलिए अल्लाह फ़रमाता है कि सिर्फ़ इन दिनों में ही दुआ मत करो, या जब कोई मुसीबत आ जाए तभी दुआ करने लगो। बल्कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि दुआ उन परेशानियों से भी बचाती है, जो अभी आई नहीं हैं, मगर कभी भी आ सकती हैं। इसलिए हमेशा अल्लाह से दुआ करते रहो। उसकी पनाह में आने की कोशिश करते रहो।

अल्लाह, जो मुश्किलें आई हैं, उनसे भी बचाने वाला है और जो नेमतें उसने अता की हैं, उन्हें भी जारी रखने वाला है। और अल्लाह बेहतर जानता है कि भविष्य में अगर कोई मुसीबत आने वाली है, तो वह उसे भी दूर कर सकता है। जब यह हालात होंगे, तभी इंसान वह सच्चा मोमिन कहलाएगा, जिसे अल्लाह ने "मोमिन" का दर्जा दिया है। इसलिए जब दुआओं के ज़रिए नेक राहों की तलब अल्लाह से करोगे, तो नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि इससे बीती हुई मुसीबत से भी हिफ़ाज़त होगी और आने वाली से भी बचाव होगा।

इसलिए हमें अपनी ज़िंदगी में ऐसा बदलाव लाना होगा, जिससे हमारा रिश्ता अल्लाह से मज़बूत बना रहे। हमें हर हाल में ख़ुशी में, ग़म में, आराम में और तकलीफ़ में अल्लाह की रहमतों को तलब करते रहना चाहिए।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

"हमारा रब हर रात क़रीबी आसमान तक आता है, जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है और कहता है: कौन है जो मुझे पुकारे, ताकि मैं उसकी पुकार का जवाब दूँ? कौन है जो मुझसे माँगे, ताकि मैं उसे दूँ? कौन है जो मुझसे बख़्शिश तलब करे, ताकि मैं उसे बख़्श दूँ?"

(सहीह बुख़ारी, किताब अद-दआवात, बाब: अद-दुआ निस्फ़ुल-लैल, हदीस 6321)

अब यह कोई रमज़ान तक ही सीमित नहीं है। यहाँ तो आम हालात की बात हो रही है कि जब भी कोई बंदा रात के पिछले हिस्से में मुझसे माँगता है, मैं उसे देता हूँ, उसकी दुआ क़ुबूल करता हूँ और उसका जवाब भी देता हूँ। लेकिन रमज़ान में अल्लाह ने एक ख़ास मौक़ा दिया है कि इस दौरान ज़्यादा-तर लोग इबादतों की तरफ़ तवज्जो देते हैं, इसलिए इन दिनों में अगर तुम भी तवज्जो करोगे, तो तुम्हें इन नेकियों की आदत पड़ जाएगी। और जब एक महीने तक यह आदत पड़ जाएगी, तो फिर इसे अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाने की कोशिश करोगे।

एक और रिवायत में आता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

"जो व्यक्ति चाहता है कि अल्लाह तंगी और मुश्किल के समय उसकी दुआओं को क़ुबूल करे, तो उसे चाहिए कि वह राहत और आराम के समय में भी कसरत से दुआ किया करे।"

(जामे तिर्मिज़ी, किताब अद-दआवात, बाब: मा जाआ अन्न दअवतुल मुस्लिम मुस्तजाबा, हदीस 3382)

हर इंसान को यह बात याद रखनी चाहिए कि उसका संबंध सदा से ही अल्लाह तआला से होना चाहिए, न कि केवल तंगी, परेशानी और दुख में ही वह उसकी ओर दौड़े और आह-ओ-ज़ारी करे। बल्कि अल्लाह तआला का सच्चा दोस्त बनने के लिए इंसान को लगातार कोशिश करनी चाहिए, और उसे अपना वली बनाने के लिए जरूरी है कि हम हमेशा उसके दर पर झुके रहें। इसलिए जैसा कि मैंने कहा, इंसान को हमेशा, सामान्य परिस्थितियों में भी, अल्लाह तआला की ओर ध्यान देना चाहिए। यही हदीस भी हमें यही सिखाती है कि केवल तकलीफ और जरूरत के समय ही अल्लाह को याद न किया जाए, बल्कि हर वक्त उसे पुकारा जाए।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है, "मैं बंदे के गुमान के अनुसार उसके साथ व्यवहार करता हूँ। जब वह मुझे याद करता है, तो मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वह मुझे अपने दिल में याद करेगा, तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करूँगा। अगर वह मेरा ज़िक्र किसी सभा में करेगा, तो मैं भी उसका ज़िक्र उससे बेहतर सभा में करूँगा। अगर वह मेरी ओर एक बालिश्त आएगा, तो मैं उसकी ओर एक हाथ जाऊँगा। अगर वह मेरी ओर एक हाथ आएगा, तो मैं उसकी ओर दो हाथ जाऊँगा। और अगर वह मेरी ओर चलकर आएगा, तो मैं उसकी ओर दौड़कर जाऊँगा।"

(बुखारी, किताब उत-तौहीद, बाब मा युज़करु फ़ी ज़ाति वन्न'ऊत, हदीस 7405)

इसलिए हर अहमदी को चाहिए कि अल्लाह तआला के ज़िक्र से अपनी ज़ुबान को हमेशा तर रखे। कोशिश यह होनी चाहिए कि हमारे हर अमल और हर क़दम का रुख अल्लाह तआला की ओर हो, ताकि वह हमसे करीब हो जाए, हमें अपने प्यार की चादर में लपेट ले, और हमारी जरूरतों को पूरा

करे। हमें तंगी और आराम, दोनों में ही अल्लाह तआला का सच्चा बंदा बने रहना चाहिए।

एक और रिवायत में आता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ज़ुन्नून अर्थात हज़रत यूनुस अलेहिस्सलाम ने मछली के पेट में यह दुआ की थी: "لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ" (अल-अंबिया: 88)। और आपने फ़रमाया कि जो भी मुसलमान किसी परेशानी में इस दुआ को करेगा, अल्लाह तआला उसकी दुआ को जरूर कबूल फरमाएगा।

(तिर्मिज़ी, किताब उद-दावात, बाब फ़ी द'वाति ज़ि-न्नून, हदीस : 3505)

यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हम पर मेहरबानी है कि उन्होंने हमें इन दुआओं की तरफ भी रहनुमाई दी, क्योंकि इंसान से गलतियाँ होती हैं, और कई बार वह अल्लाह तआला के हक़ को पूरा नहीं करता। लेकिन अल्लाह तआला फिर भी अपने बंदों पर मेहरबान है, और उसने उन्हें खुद दुआएँ सिखाई हैं। कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने कई दुआएँ सिखाई हैं। यह दुआएँ हमें इसलिए सिखाई गई हैं ताकि हम उन्हें करें और चूँकि वे अल्लाह की सिखाई हुई हैं, इसलिए वह उन्हें कबूल भी करता है। लेकिन शर्त यह है कि हम पहले उसका हक़ अदा करने वाले बनें।

"فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي" अर्थात "वे मेरी पुकार को स्वीकार करें" - यह अल्लाह तआला का हुक्म है। इसका मतलब है कि उसकी बातों को सुनो और अपने ईमान को ताज़ा करो। हमें खुद अपने हालात का जायजा लेना चाहिए कि हम अल्लाह तआला के कितने आदेशों का पालन कर रहे हैं।

हज़रत यूनुस अलेहिस्सलाम की इस दुआ की व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलेहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इससे यह सबक मिलता है कि अल्लाह तआला तक़दीर को बदल देता है। रोना-धोना और सदक़ात (दान) भी किसी विपत्ति के फैसले को पलट सकते हैं, जैसा कि हज़रत यूनुस अलेहिस्सलाम की क़ौम के मामले में हुआ था। अगर किसी पर सज़ा का फैसला हो गया हो, तो भी दुआ उसे बदल सकती है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 238, एडिशन 1984)

कुछ लोग कहते हैं कि अगर अल्लाह तआला ने तक़दीर में पहले से ही कुछ लिख दिया है और उसे पहले से मालूम है कि क्या होना है, तो फिर हमें दुआ करने की क्या जरूरत है? हमें नेकियाँ करने की क्या जरूरत है? आप (हज़रत मसीह मौऊद अलेहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने यह दुआ सिखाई ही इसलिए है कि हम इसे करें। हज़रत यूनुस अलेहिस्सलाम का वाक़या बताकर अल्लाह तआला ने यह भी साबित कर दिया है कि वह तक़दीर के फैसलों को बदल सकता है। अगर इंसान रो-धोकर, अल्लाह तआला से सच्चा संबंध जोड़कर, नेकियाँ करने लगे और बुराइयों से बचे, तथा अल्लाह तआला के दर पर गिरकर दुआ करे, तो वह फरमाता है कि "जो लोग मुसीबत आने से पहले ही दुआ करते हैं, इस्तिग़फार करते हैं और सदक़ा देते हैं, अल्लाह तआला उन पर रहमत करता है और उन्हें अपने अज़ाब से बचा लेता है।"

इसी तरह, अगर कोई मुसीबत आ चुकी हो, तो भी अल्लाह तआला इतना मेहरबान है कि वह उसे दूर कर सकता है, बशर्ते कि दुआ सच्चे दिल से की गई हो और इंसान का इस्तिग़फार वास्तविक हो। हज़रत मसीह मौऊद अलेहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मेरी इन बातों को केवल कहानी समझकर न सुनो। मैं अल्लाह के लिए नसीहत करता हूँ कि अपने हालात पर गौर करो और खुद भी दुआ में लगो, तथा अपने दोस्तों को भी दुआ करने की ताकीद करो। इस्तिग़फार, अल्लाह तआला के अज़ाब और गंभीर मुश्किलों के खिलाफ एक ढाल का काम करता है।"

अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में फरमाता है: "مَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ" (अल-अन्फाल: 34) अर्थात "अल्लाह उन्हें अज़ाब नहीं देगा, जब तक कि वे इस्तिग़फार करते रहेंगे।"

हज़रत मसीह मौऊद अलेहिस्सलाम फ़रमाते हैं, "अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह के अज़ाब से महफूज़ रहो, तो इस्तिग़फार की कसरत करो।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 207, एडिशन 1984)

यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला ऐसा नहीं है कि वह उन लोगों को अज़ाब दे जो उसकी बख्शिश मांग रहे हों। हज़रत मसीह मौऊद अ.पृष्ठ ने इसकी व्याख्या में फ़रमाया कि अगर तुम चाहते हो कि इस अज़ाबे इलाही से बचो तो बहुत ज्यादा इस्तिग़फ़ार किया करो। फिर एक रिवायत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला बहुत ही शर्म व हया वाला, बड़ा करीम और सखी है। जब बंदा उसके हुज़ूर दोनों हाथ उठाता है तो वह उन्हें खाली और नामुराद लौटाने से शर्माता है।

(तिर्मिज़ी, किताब अद-द'आवात, बाब: इनल्लाह हय्युन करीम, हदीस 3556)

अर्थात सच्चे दिल से मांगी गई दुआ को वह नामंज़ूर नहीं करता, बल्कि उसे क़ुबूल कर लेता है। इसलिए अल्लाह तआला से जो दुआ मांगी जाए, उसे पूरी सच्चाई और दिल की गहराइयों से मांगना चाहिए। गुज़िश्ता गुनाहों और ग़लतियों की माफ़ी तलब करनी चाहिए और आगे के लिए नेकियों पर क़ायम रहने की तौफीक़ मांगनी चाहिए। फिर उस पर क़ायम रहने की कोशिश भी करनी चाहिए। रमज़ान में भी इस पर मेहनत करनी चाहिए और रमज़ान के बाद भी इसकी कोशिश जारी रखनी चाहिए, फिर देखो कि अल्लाह तआला किस तरह दौड़कर हमारी तरफ़ आता है और हमें अपनी आग़ोशे रहमत में ले लेता है।

हज़रत मसीह मौऊद अ.पृष्ठ फ़रमाते हैं, "जिस तरह अल्लाह तआला की किताबों में नेक इंसान और बद इंसान के बीच फ़र्क़ किया गया है और उनके अलग-अलग मक़ाम मुकर्रर किए गए हैं, उसी तरह अल्लाह तआला के क़ानून-ए-कुदरत में भी उन दो इंसानों के बीच फ़र्क़ है, जिनमें से एक अल्लाह तआला को फैज़ का चश्मा समझकर उसकी बारगाह में हालत-ए-हाली और क़ाली दुआओं के ज़रिए क़ूवत और इमदाद मांगता है और दूसरा महज़ अपनी तदबीर और क़ूवत पर भरोसा करके दुआ को मज़ाक समझता है, बल्कि अल्लाह तआला से बेनियाज़ और तकब्बुर के साथ रहता है। जो शख़्स मुश्किल और मुसीबत के वक़्त अल्लाह से दुआ करता है और अपनी परेशानियों का हल चाहता है, वह बशर्ते कि दुआ को कमाल तक पहुंचाए," अर्थात यह शर्त है कि दुआ को कमाल तक पहुंचाना ज़रूरी है, "अल्लाह तआला से इत्मिनान और हक़ीक़ी ख़ुशहाली पाता है। और अगर फ़र्ज़ करो कि उसे उसकी मुराद न भी मिले, तब भी अल्लाह तआला की तरफ़ से किसी और तरह की तसल्ली और सुकून उसे अता होता है, और वह हरगिज़-हरगिज़ नामुराद नहीं रहता। और इसके अलावा, उसकी ईमानी क़ूवत में इज़ाफ़ा होता है और यक़ीन बढ़ता है।"

(अय्यामुस्सल्ह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 14, पृष्ठ 237-236)

अब हमें देखना होगा कि हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को किस तरह हासिल कर सकते हैं। अल्लाह तआला ने खुद नेक और बद में फ़र्क़ रखा है। जो नेक है, वह अल्लाह तआला को हर तरह के फैज़ का चश्मा समझता है और हर तरह की क़ूवत उसी से मांगता है। यह यक़ीनन एक मोमिन की निशानी है। जबकि एक तकब्बुर करने वाला इंसान ऐसा नहीं करता। वह समझता है कि दुनिया के ज़ाहिरी असबाब अपनाकर बहुत कुछ हासिल कर लेगा। जब कोई इस सोच में पड़ जाता है, तो फिर अल्लाह तआला भी ऐसे बंदों को किसी न किसी वक़्त पकड़ लेता है।

एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी महफ़िल से उठते थे तो यह दुआ पढ़ते थे:

"ऐ मेरे अल्लाह! तू हमें अपना वह ख़ौफ़ अता कर जो हमारे और गुनाहों के दरमियान रुकावट बन जाए ताकि हम तेरा ग़ुस्सा न मोल लें। हमें वह इताअत अता कर जिसके सबब तू हमें जन्नत में दाखिल कर दे, और हमें ऐसा

यक़ीन अता कर जिससे दुनिया के मसाएब हमारे लिए आसान हो जाएं। ऐ अल्लाह! तू हमें हमारे कानों, हमारी आँखों और हमारी ताक़तों से ज़िंदगी भर सही फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ दे और हमें नेकियों का वारिस बना। जो हम पर ज़ुल्म करे, उससे तू हमारा इंतिक़ाम ले, और जो हमसे दुश्मनी रखे, उसके मुक़ाबले में तू हमारी मदद कर। हमारे दीन में किसी भी तरह की आज़माइश को दाख़िल न कर और हमें ऐसा बना कि दुनिया हमारी सबसे बड़ी फ़िक्र और सबसे बड़ा ग़म न हो। और न ही हमारा इल्म सिर्फ़ दुनिया तक ही महदूद रहे। और हमारे ऊपर कोई ऐसा शख़्स मुसल्लत न कर जो हम पर रहम न करे और हमसे नरमी से पेश न आए।"

(तिर्मिज़ी, किताब अद-द'आवात, बाब: अल्लाहुम्मा अक्सिम लना... हदीस 3502)

इसलिए इस दुआ को हमेशा याद रखना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह कितनी दर्द भरी और जामे दुआ हमें सिखाई है। हमें अल्लाह तआला से यह दुआ मांगनी चाहिए कि हमारी तमाम ताक़तें, हमारे तमाम अज़ा (शरीर के अंग), हमारी आंखें, कान, नाक, ज़बान, दिमाग़ और दिल, सब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल के वसीले बन जाएं। हमारा हर एक अंग अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन जाए और हम उसके इनआमात के सच्चे वारिस बनें। और यही अल्लाह तआला हमें ज़ालिमों से भी बचाए।

आजकल दुनिया के हालात भी हमारे सामने हैं। पाकिस्तान, बांग्लादेश और दूसरी जगहों पर कुछ ग़लत क़िस्म के गिरोहों ने क़ब्ज़े किए हुए हैं, या इन गिरोहों की तरफ़ से हमले होते रहते हैं। ये गिरोह इतने ताक़तवर हो गए हैं कि हुकूमतें भी डरकर उनकी बात मानने पर मजबूर हो जाती हैं। हमें अल्लाह तआला से यह दुआ करनी चाहिए कि वह हमें ज़ालिमों से नजात दे और उनसे बदला ले, और जो हमसे दुश्मनी रखते हैं, उनके मुक़ाबले में हमारी मदद करे।

अगर हम रमज़ान में ख़ुलूस के साथ अल्लाह तआला से दुआएं करेंगे, तो अल्लाह तआला एक अज़ीम इनक़िलाब पैदा करेगा। फिर हम देखेंगे कि चाहे वह पाकिस्तान का कोई कट्टर मौलवी हो, कोई ताक़तवर इंसान हो, या किसी और हुकूमत का कोई ताक़तवर शख़्स हो, वह हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता। अगर हम सच्चे दिल से अल्लाह की तरफ़ झुक जाएंगे, तो अल्लाह तआला हमारी मदद करेगा और हमारा सच्चा दोस्त और हिफ़ाज़त करने वाला बन जाएगा।

हज़रत मसीह मौऊदअलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह के फज़्ल को हासिल करने का सबसे नज़दीकी तरीका दुआ है, और एक मुकम्मल दुआ के लिए ज़रूरी है कि उसमें रक़्त (भावुकता), इज़्तिराब (बेचैनी), और गुदाज़िश (नरमी) हो। उसमें एक आजिज़ी और एक बेचैनी होनी चाहिए, जिससे अंदरूनी उथल-पुथल पैदा हो। फ़रमाया कि जो दुआ आजिज़ी, इज़्तिराब और शिकस्ता-दिली (टूटा हुआ दिल) से भरी हुई होती है, वह अल्लाह के फज़्ल को अपनी तरफ़ खींच लेती है और मंज़ूर होकर असल मक़सद तक पहुँचाती है। मगर मुश्किल यह है कि यह भी अल्लाह के फज़्ल के बिना हासिल नहीं हो सकती। और फिर इसका इलाज यही है कि दुआ करता रहे, चाहे दिल में सुस्ती हो, बेज़ारी हो, लेकिन फिर भी वह इससे ऊबे नहीं। चाहे दुआ में मज़ा आए या न आए, लेकिन दुआ करता रहे, क्योंकि उसके अलावा कोई और सहारा नहीं। अल्लाह से हमें यही कहना है कि हमें और कहीं जाना ही नहीं, हम तेरे ही दर पर बैठे हैं, और हमारा दिल तभी सुकून पाएगा जब तू हमारी बातें सुन लेगा।

आपने फ़रमाया कि चाहे यह दिखावे और बनावटी तौर पर ही हो, लेकिन दुआ जारी रखो। फिर एक समय आएगा जब यह दिखावा हक़ीक़ी दुआ में बदल जाएगा। आप फ़रमाते हैं कि असली और हक़ीक़ी दुआ के लिए भी दुआ ही की ज़रूरत होती है। बहुत से लोग दुआ करते हैं, मगर उनका दिल ऊब जाता है और वे कह उठते हैं कि कुछ नहीं बनता। आपने फ़रमाया कि हमारी नसीहत यह है कि इसी संघर्ष में बरकत है, इसी मशक़्क़त से ही मक़सूद का मोती निकल आता है। जैसे सोने को पाने के लिए लोग नदियों के किनारे बैठकर मिट्टी छानते रहते हैं, दिन-रात मेहनत करते हैं और कई दिनों की मेहनत के बाद उन्हें थोड़ा सा सोना हासिल होता है, उसी तरह अल्लाह के आगे झुकने से ही बरकत मिलती है। फिर एक दिन आता है जब इंसान का दिल और ज़ुबान एक हो जाते हैं, और फिर खुद ही आजिज़ी और रक़्त पैदा हो जाती है।

फ़रमाया कि जो रात को उठता है, भले ही उसमें ध्यान और लगन न हो, और वह बे-रुख़ी से नमाज़ पढ़ता हो, लेकिन फिर भी अगर वह अल्लाह से यह दुआ करे कि ऐ अल्लाह! दिल तेरे ही क़ब्ज़े में है, इसे साफ़ कर दे, तो अल्लाह उसकी उस बेज़ारी को दूर कर देगा और उसे ऐसी हालत में डाल देगा कि उसका दिल दुआ की तरफ़ खिंचने लगेगा। उसकी अंदरूनी रुकावटें दूर हो जाएँगी, और एक दिन ऐसा आएगा जब वह खुद ब खुद भावुक होकर दुआ करेगा। यही वह वक़्त होता है जब दुआ की क़ुबूलियत की घड़ी आती है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 6, पृष्ठ 94-93, एडिशन 1984)

फिर आपने फ़रमाया कि वह अल्लाह, जिसकी तरफ़ हम बुलाते हैं, निहायत करीम, रहीम, हया वाला, सच्चा, वफ़ादार और आज़िज़ों पर रहम करने वाला है। इसलिए तुम भी वफ़ादार बनो। पूरे सिद्क़ और वफ़ा के साथ दुआ करो, और वह तुम पर रहम करेगा। दुनिया के शोर-गुल से अलग हो जाओ और अपने नफ़्सानी झगड़ों को दीन का रंग मत दो। अल्लाह के लिए हार मान लो और शिकस्त को क़बूल कर लो, तो तुम बड़ी-बड़ी जीतों के वारिस बन जाओगे।

फ़रमाया कि छोटी-छोटी दुनियावी बातों में उलझने से बचना होगा। अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने के लिए इंसान को अपने रिश्तेदारों के हक़, दोस्तों के हक़ और तमाम इंसानी अधिकारों की अदायगी की फ़िक्र करनी होगी। तभी अल्लाह के हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ मिलेगी और दुआ की क़ुबूलियत का नज़ारा देखने को मिलेगा। आपने फ़रमाया कि दुआ की पहली बरकत यह है कि इंसान में पाक तब्दीली (पवित्र परिवर्तन) पैदा होती है। यह तब्दीली सिर्फ़ रमज़ान तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि हमेशा के लिए होनी चाहिए, तभी दुआ की क़ुबूलियत का असली असर इंसान पर प्रकट होता है।

फिर आपने फ़रमाया कि इस तब्दीली से अल्लाह भी अपनी रहमतों और इनामात की सिफ़तों को हरकत में लाता है और इंसान को उनसे फ़ैज़याब करता है। दुनिया इन बातों को नहीं जानती, लेकिन जब कोई पूरी तरह अल्लाह का हो जाता है, तो ऐसा महसूस होता है जैसे वह एक नया अल्लाह है (हालाँकि अल्लाह एक ही है), लेकिन उसकी नई तजल्ली एक नए अंदाज़ में प्रकट होती है।

(लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 20, पृष्ठ 223)

जो लोग कहते हैं कि तक़दीर तय हो चुकी है, इसमें बदलाव नहीं हो सकता, तो फिर दुआ का क्या फ़ायदा? आपने फ़रमाया कि जब नेक नीयत से दुआ की जाती है, तो अल्लाह तक़दीर बदल देता है। उसके फैसले बदल जाते हैं, और बुरे अंजाम अच्छे अंजाम में बदल जाते हैं।

इसलिए हमें दुआओं की तरफ़ पूरी तवज्जो देने की ज़रूरत है। हमें इस रमज़ान को ऐसा रमज़ान बनाना चाहिए जो दुआ की क़ुबूलियत का ज़रिया बने, और हमें पाक तब्दीली प्रदान करे। फिर यह तब्दीली सिर्फ़ रमज़ान तक सीमित न रहे, बल्कि हमेशा के लिए हमारी ज़िंदगी का हिस्सा बन जाए। अल्लाह हमें इस पर कायम रहने की तौफ़ीक़ अता करे और हमें दुश्मनों, तमाम मुख़ालिफ़ों और ज़ालिमों से निजात दे। अल्लाह हमें तौफ़ीक़ दे कि हम इस रमज़ान को अपनी ज़िंदगी में पाक तब्दीली लाने का ज़रिया बना लें, और यह तब्दीली हमेशा हमारे साथ रहे। अल्लाह हमें इसकी तौफ़ीक़ अता करे।

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

अमेरिका में तैनात सिरा-लियोन के राजदूत और गेम्बिया के राजदूत के सचिव की हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात और विभिन्न विषयों पर चर्चा।

न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी के इतिहास विभाग की प्रोफेसर की मुलाकात।

अमेरिका के दूरदराज इलाकों से आए जमाअत के सदस्यों द्वारा अपने प्यारे इमाम से मुलाकात के बाद उनके अनुभव।

एम.टी.ए टेलीपोर्ट का निरीक्षण।

सामूहिक बैअत का ईमान को मज़बूती देने वाला आयोजन।

वाकफात-ए-नौ और वाकफीन-ए-नौ की हज़ूर-ए-अनवर के साथ अलग-अलग मुलाकातें और विविध विषयों पर मार्गदर्शन।

सामूहिक बैअत

नमाज़ों की अदायगी के बाद कार्यक्रम के अनुसार बैअत की रस्म अदा की गई। हज़ूर अनवर के मुबारक हाथ में बैअत का सौभाग्य प्राप्त करने वाले मित्र Charistopher R Meyers थे। ये साहिब पिछले तीन महीनों से तबलीग़ के अंतर्गत थे और नए मबाइ'ईन के कार्यक्रम में शामिल हुए थे, वहीं उन्होंने हज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर बैअत करने की इच्छा प्रकट की थी।

क्रिस्टोफ़र के साथ तीन अन्य नए मबाइ'ईन – हम्ज़ा इलियास साहिब, इमाद अहमद सलीम साहिब और हस्पानवी मूल के मित्र Roberto William Cerrato साहिब भी बैअत में शामिल हुए।

इस बैअत की रस्म में वे सभी पुरुष और महिलाएँ शामिल हुए जो नमाज़ में हज़ूर अनवर की इमामत में शामिल हुए थे, जिनकी संख्या तेरह सौ से अधिक थी। बहुतों ने इस बात का इज़हार किया कि हमारे वहम-ओ-गुमान में भी नहीं था कि हमें हाथ से बैअत करने की रस्म में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त होगा। कुछ ने रोते हुए कहा कि यह हमारी ज़िंदगी में पहली बैअत की ऐसी रस्म थी जिसमें हमें शिरकत करने का अवसर मिला।

कुछ ने यह भी कहा कि जब हमें मालूम हुआ कि आज ज़ोहर और अस्र की नमाज़ों के बाद बैअत की रस्म है तो हम अपने घरों से मस्जिद की ओर दौड़ पड़े ताकि समय से पहले पहुँच जाएँ और इस सौभाग्य से वंचित न रह जाएँ। बैअत की रस्म के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

मसरूर टेलीपोर्ट मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया का अध्ययन

कार्यक्रम के अनुसार शाम छह बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहाइशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए और "मसरूर टेलीपोर्ट मुस्लिम टीवी अहमदिया इंटरनेशनल" के मुआइने के लिए तशरीफ़ ले गए। MTA का यह अर्थ स्टेशन मस्जिद बैतुर्रहमान के बाहरी परिसर में स्थित है। हज़ूर अनवर ने सबसे पहले नेटवर्क ऑपरेशन सेंटर (ट्रांसमिशन रूम) का मुआइना फ़रमाया और डायरेक्टर टेलीपोर्ट चौधरी मुनीर अहमद साहिब से सिस्टम्स के बारे में कुछ मसाइल पूछे। इस सेंटर में कंप्यूटर सर्वर, सैटेलाइट, फ़ाइबर ऑप्टिक और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग ट्रांसमिशन के सिस्टम्स स्थापित हैं। हज़ूर अनवर ने करम फ़रमाते हुए इस हिस्से का भी मुआइना फ़रमाया। इसके बाद हज़ूर अनवर टेलीपोर्ट के मास्टर कंट्रोल रूम (MCR) में तशरीफ़ लाए जहाँ सभी चैनलों के कंट्रोल और मॉनिटरिंग सिस्टम्स लगाए गए हैं। हज़ूर अनवर ने डायरेक्टर टेलीपोर्ट से नॉर्थ और साउथ अमेरिका में ट्रांसमिशन के बारे में कुछ बातों को दरयाफ़्त किया और हिदायतें दीं।

इसके पश्चात डाइनिंग और बोर्ड रूम से होते हुए हज़ूर अनवर इस टेलीपोर्ट के कार्यालय में तशरीफ़ लाए। डायरेक्टर टेलीपोर्ट चौधरी मुनीर अहमद साहिब ने हज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि कृपया कार्यालय की कुर्सी को बरकत बख़्शें। हज़ूर अनवर ने करम फ़रमाते हुए कुछ देर के लिए उस कुर्सी पर विराजमान होकर डायरेक्टर साहिब को हिदायत दी कि आप सामने वाली कुर्सी पर बैठ जाएँ ताकि तस्वीर में आ सकें।

इसके बाद हज़ूर अनवर बाहर तशरीफ़ लाए जहाँ मसरूर टेलीपोर्ट के स्टाफ के सदस्य एक पंक्ति में खड़े थे। हज़ूर अनवर ने दूसरी मंज़िल के बारे में जानकारी चाही। हज़ूर की सेवा में अर्ज़ किया गया कि वहाँ स्टोर को परिवर्तित कर पोस्ट प्रोडक्शन का कार्यालय बनाया गया है।

फिर हज़ूर अनवर बाहर बरामदे में तशरीफ़ लाए और कुछ पल के लिए बाहर बड़े सैटेलाइट ट्रांसमिशन डिश का मुआइना फ़रमाया।

क्लास वाक़िफ़ात-ए-नौ

इस दौरे के बाद शाम छह बजकर पाँच मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ "मस्जिद बैतुर्रहमान" के मर्दाना हॉल में तशरीफ़ लाए जहाँ वाक़िफ़ात-ए-नौ की हज़ूर अनवर के साथ क्लास हुई। (तफ़सीली रिपोर्ट यहाँ मुआइना करें)। यह क्लास शाम सात बजे समाप्त हुई।

क्लास वाक़िफ़ीन-ए-नौ

इसके पश्चात सात बजकर दस मिनट पर कार्यक्रम के अनुसार वाक़िफ़ीन-ए-नौ की हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लास शुरू हुई। (तफ़सीली रिपोर्ट यहाँ मुआइना करें)। यह क्लास रात आठ बजकर तीन मिनट पर समाप्त हुई।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपने कार्यालय तशरीफ़ ले गए। रात साढ़े आठ बजे हज़ूर अनवर ने "मस्जिद बैतुर्रहमान" तशरीफ़ लाकर मग़रिब और इशा की नमाज़ें जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहाइशगाह तशरीफ़ ले गए।

हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऐतिहासिक दौरा अमेरिका 2022 — 7 से 13 अक्तूबर

(बारहवाँ दिन, 7 अक्तूबर 2022, शुक्रवार)

7 अक्तूबर 2022 को, जो कि जुमा का दिन था, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के अमेरिका के दौरे का बारहवाँ और डैलस, टेक्सास में छठा दिन था। हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा छह बजे मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ़ लाकर नमाज़-ए-फ़ज्र अदा कराई, जिसमें बड़ी संख्या में जमाअत के अफ़राद शामिल हुए। आज जुमा होने की वजह से हाज़िरी असाधारण रूप से ज़्यादा

थी। जमाअत के लोग दूर-दराज़ इलाकों से लंबा सफर तय करके अपने प्यारे आक़ा ऐय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दीदार के लिए हाज़िर हुए थे।

सुबह से ही हज़रत अमीरुल मौमेनीन खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इमामत में जुमा की नमाज़ अदा करने के इरादे से मस्जिद के बाहर जमाअत के लोगों की कतारें लगनी शुरू हो गई थीं। सड़क के बाहर और पार्किंग लॉट में सुरक्षा के मद्देनज़र स्थानीय प्रशासन की तरफ़ से कई पुलिस गाड़ियाँ मौजूद थीं। जुमा का खुतबा शुरू होने से पहले ही मस्जिद, हॉल और तमाम कमरे भर चुके थे। असाधारण हाज़िरी के मद्देनज़र मस्जिद बैतुल इकराम के परिसर में अतिरिक्त तंबुओं (ओवरफ्लो टेंट्स) का भी इंतज़ाम किया गया था। दोपहर ठीक एक बजे जब हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-जुमा शुरू कराई, तो सारे ओवरफ्लो टेंट्स भी भर चुके थे। लिहाज़ा सैकड़ों अतिरिक्त लोग ऐसे भी थे जिन्होंने खुले मैदान में बिछी सफों और लंगरख़ाने के तंबू में नमाज़ अदा की।

आज अमेरिका और कनाडा के दूर-दराज़ इलाकों से घंटे-घंटे का लंबा सफर तय करके आने वाले हज़ारों जमाअत के अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इमामत में नमाज़-ए-जुमा अदा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रहिल अज़ीज़ ने जुमा के खुतबे के साथ डैलस की मस्जिद बैतुल इकराम का बाकायदा उद्घाटन फ़रमाया। हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का खुतबा-ए-जुमा पूरी दुनिया में MTA के सीधा प्रसारण, यूट्यूब और दूसरे मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स के ज़रिए सुना और देखा गया।

डैलस मेट्रो एरिया के पश्चिमी हिस्से में फ़ोर्ट वर्थ नाम का एक शहर है। वहाँ की जमाअत ने कुछ साल पहले मस्जिद के लिए एक ज़मीन ख़रीदी थी, जिसे हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल क़य्यूम नाम दिया। स्थानीय जमाअत की दरख़्वास्त पर आज शाम तक़रीबन 7 बजे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल इकराम से एक घंटे का सफर तय करके फ़ोर्ट वर्थ की मस्जिद पहुँचे, जहाँ पर स्थानीय जमाअत ने हज़ूर अनवर का पुरजोर स्वागत किया। सबसे पहले हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की यादगारी तख्ती की अनावरण फ़रमाई और दुआ करवाई। फिर हज़ूर अनवर सहन की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और वहाँ यादगारी पौधा लगाने के बाद मस्जिद का मुआइना फ़रमाया। इसके बाद फ़ोर्ट वर्थ के खुशक़िस्मत जमाअत के अफ़राद को हज़ूर अनवर की सोहबत में कुछ लम्हात गुज़ारने का मौक़ा मिला, जिसमें उन्होंने अपने जज़्बात पेश किए और कई सवाल भी किए। सवाल-जवाब के बाद स्थानीय मज्लिस-ए-आमला को हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ ग्रुप फ़ोटो खिंचवाने की सआदत नसीब हुई। इसके बाद हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल क़य्यूम में 7 बजकर 55 मिनट पर मग़रिब और इशा की नमाज़ें अदा कराईं। सवा आठ बजे हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का क़ाफ़िला पुलिस एस्कॉर्ट के साथ रवाना होकर तक़रीबन साढ़े नौ बजे डैलस की मस्जिद बैतुल इकराम पहुँचा।

कल मस्जिद बैतुल इकराम के उद्घाटन की खुशी और अमीरुल मौमेनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के सम्मान में जमाअत अहमदिया अमेरिका की ओर से एक डिनर (रिसेप्शन) पेश किया जाएगा। इस कार्यक्रम के लिए देशभर से महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक हस्तियों को आमंत्रित किया गया है।

(तेरहवाँ दिन, 8 अक्तूबर 2022, शनिवार)

डैलस की मस्जिद बैतुल इकराम के उद्घाटन की खुशी और हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रहिल अज़ीज़ के सम्मान में डिनर (रिसेप्शन)

टेक्सास के शहर एलन की प्रशासनिक ओर से हज़रत अमीरुल मौमेनीन खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में शहर की चाबी का तोहफ़ा।

आज 8 अक्तूबर 2022, शनिवार को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के अमेरिका के दौरे का तेरहवाँ और डैलस, टेक्सास में सातवाँ दिन था। हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा छह बजे मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ़ लाकर फ़ज्र की नमाज़ अदा कराई। रोज़ाना की तरह बड़ी संख्या में अहबाब ने नमाज़ में शिरकत की। आज शाम मस्जिद बैतुल इकराम के उद्घाटन की खुशी और हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के सम्मान में एक डिनर आयोजित किया जा रहा है। इस ऐतिहासिक और बर्कतमंद महफ़िल में शिरकत के लिए अमेरिका और कनाडा से हज़ारों की संख्या में लोग लंबा सफर तय कर के डैलस पहुँचे।

ज़ोहर और अस्र की नमाज़ें डेढ़ बजे हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इमामत में अदा की गईं। नमाज़ के बाद हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लंगरख़ाना (किचन) तशरीफ़ ले गए और डिनर की तैयारियों में लगी टीम का हौसला अफ़ज़ाई करते हुए उनसे कुछ देर रुके और खाने की व्यवस्थाओं के बारे में पूछा। असाधारण हाज़िरी को देखते हुए मस्जिद से बाहर के प्रांगण में अतिरिक्त तंबुओं का इंतज़ाम किया गया था जो हज़ारों के मजमे के आगे भी छोटे नज़र आने लगे। जब भी हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ रहने के स्थान से मस्जिद या मस्जिद से रहने के स्थान की ओर जाते, तो बड़ी संख्या में अहबाब रास्ते में खड़े हो कर अपने प्यारे आक़ा का दीदार करते। बच्चे-बूढ़े सब "अस्सलामु अलैकुम प्यारे हज़ूर" कहते हुए सुनाई देते, जिसका जवाब हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इनायत और रहमत से हाथ उठाकर देते।

डिनर (रिसेप्शन)जमाअत अहमदिया अमेरिका ने डैलस की मस्जिद बैतुल इकराम के बर्कतमंद उद्घाटन की खुशी और हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के सम्मान में डिनर पेश किया। इसके लिए मस्जिद परिसर में एक विशाल तंबू (मार्की) लगाया गया था। शाम ठीक 6 बजे हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ रिसेप्शन टेंट में तशरीफ़ लाए और कार्यक्रम का आगाज़ फ़रमाया। देशभर से जानी-मानी राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक हस्तियों ने इस कार्यक्रम में शिरकत की, जिनकी संख्या 140 थी।

क़ुरआन-ए-कारीम की तिलावत करने का सौभाग्य मक़्ररम सैयद लबीब जनूद साहिब, मुर्बी-ए-सिलसिला को मिला, जिसका तर्जुमा मक़्ररम इब्राहीम नऊम साहिब ने किया। इसके बाद मक़्ररम अमजद महमूद ख़ान साहिब, नॅशनल सेक्रेटरी अफेयर्स-ए-ख़ारिज़ा ने जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का तार्रुफ़ पेश किया। इसके पश्चात हॉनरेबल कार्ल क्लेमेंसिक, एलन, टेक्सास के सिटी काउंसिल के सदस्य ने हज़ूर अनवर की खिदमत में एलन सिटी की तरफ़ से वेलकम कहकर शहर की चाबी का तोहफ़ा पेश किया, जिसे हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कुबूल फ़रमाया। फिर डॉक्टर रॉबर्ट हंट, प्रोफ़ेसर साउदर्न मेथोडिस्ट यूनिवर्सिटी और अमेरिकी कॉन्ग्रेसमैन हॉनरेबल माइकल मैक्कॉल ने हज़ूर की सेवा में ख़ुश आमदीद कहा और अपने विचार पेश किए। इसके बाद हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ख़ास तक़रीर के लिए मंच पर तशरीफ़ लाए, जिसमें आपने मस्जिदों के हक़ूक़, इबादतों की अहमियत और हक़ूक़ुल इबाद की अदायगी की तरफ़ ध्यान दिलाया। आख़िर में आपने दुआ करवा कर इस बर्कतमंद प्रोग्राम का समापन फ़रमाया।

इस ऐतिहासिक महफ़िल में शामिल होने के लिए जमाअत के अफ़राद हज़ारों मील का सफर तय कर के पहुंचे। कार्यक्रम के दौरान रिसेप्शन मार्की के

बाहर भी हज़ारों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

कार्यक्रम के बाद रात साढ़े आठ बजे हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ़ लाए और नमाज़-ए-मग़रिब व इशा अदा करवाईं।

कल इंशा अल्लाहुल अज़ीज़ प्यारे आक़ा ऐय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ डैलस, टेक्सास से बैतुर्रहमान, मेरीलैंड के लिए रवाना होंगे।

(चौदहवाँ दिन, रविवार, 9 अक्तूबर 2022)

डैलस, टेक्सास से विशेष चार्टर्ड विमान के ज़रिए रवाना, बैतुर्रहमान, मेरीलैंड में वालहाना इस्तक़बाल

आज 9 अक्तूबर 2022, रविवार को हज़रत अमीरुल मौमेनीन खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के अमेरिका दौरे का चौदहवाँ दिन था। हज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्थानीय समयानुसार सुबह सवा छह बजे मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ़ लाए और तमाम अहबाब को नमाज़-ए-फ़ज्र अदा करवाई।

सुबह लगभग ग्यारह बजे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए, जहाँ पहले से ही बड़ी तादाद में मुखलेसीन अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए मौजूद थे। एक सप्ताह से अपने आक़ा अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ की क़ुर्बत में रहने के बाद जुदाई के यह लम्हात बेहद कठिन महसूस हो रहे थे। स्थानीय अहबाब के चेहरों पर उदासी साफ़ झलक रही थी। इस मौक़े पर भी अहबाब जोश और भावुकता के साथ नार-ए-तकबीर और "मुहसिन-ए-इंसानियत ज़िंदाबाद" के नारों की गूंज में मग्न थे। कुछ लम्हों की रौनक अफ़रोज़ी के बाद सैयदना अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ अपनी गाड़ी में तशरीफ़ ले गए और आपका काफ़िला डैलस एयरपोर्ट के ख़ास टर्मिनल की ओर रवाना हुआ, जहाँ "ख़िलाफ़त फ़्लाइट" हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ की मुन्तज़िर थी। इस विमान में लगभग पचहत्तर लोगों को हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ के साथ डैलस से मैरीलैंड के बाल्टीमोर एयरपोर्ट तक सफ़र करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

"ख़िलाफ़त फ़्लाइट" आज दोपहर सवा बारह बजे डैलस से रवाना हुई और पौने चार बजे मैरीलैंड के बाल्टीमोर एयरपोर्ट पहुंची, जहाँ हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ के इस्तक़बाल के लिए मुख़र्रम फ़लाहुद्दीन शम्स साहिब (नायब अमीर जमाअत अहमदिया अमेरिका), मुख़र्रम मुख़्तार अहमद मिल्ही साहिब (नेशनल जनरल सेक्रेटरी), मुख़र्रम सय्यद शमशाद अहमद नासिर साहिब (मुरब्बी सिलसिला साउथ वर्जीनिया) और मुख़र्रम मुदील अब्दुल्ला साहिब (सदर मजलिस ख़ुद्दामुल-अहमदिया अमेरिका) मौजूद थे। पुलिस एस्कॉर्ट के साथ हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ का काफ़िला दोपहर साढ़े चार बजे मस्जिद बैतुर्रहमान पहुंचा, जहाँ पहले से ही बड़ी तादाद में जमाअत के अहबाब अपने प्यारे आक़ा की एक झलक पाने के लिए मौजूद थे।

प्यारे आक़ा का इस्तक़बाल करते हुए मर्द हज़रात ने पुरजोष अंदाज़ में नार-ए-तकबीर बुलंद किए। नासिरात और लजना ने हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ का स्वागत एक सुर में मधुर स्वर में नज़्म "सो बिस्मिल्ला जी आयाँ नूं" के साथ किया और अंग्रेज़ी व पंजाबी में शेर भी पेश किए। मस्जिद बैतुर्रहमान के अहाते में हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ के इस मुबारक आगमन के अवसर पर बड़े-बड़े बैनर लगाए गए थे, जिन पर "वो बादशाह आया" और "इन्नी मअक या मसरूर" सहित अन्य अल्फ़ाज़ दर्ज थे।

दोपहर पाँच बजकर पच्चीस मिनट पर हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाए और अहबाब को नमाज़-ए-ज़ुहर और असर पढ़ाई। मस्जिद और हॉल के भर जाने के बाद सैंकड़ों लोगों ने बाहर ओवरफ़्लो टेंट्स में नमाज़ अदा की।

मस्जिद बैतुर्रहमान के बाहर नमाज़-ए-मग़रिब से कई घंटे पहले ही अहबाब कतारों में मौजूद थे। हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ शाम क़रीब सवा आठ बजे मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाए और तमाम अहबाब को नमाज़-ए-मग़रिब व इशा पढ़ाई।

(पंद्रहवां दिन, 10 अक्तूबर 2022, सोमवार)

मजलिस ख़ुद्दामुल-अहमदिया अमेरिका के दफ़्तर 'सराय-ए-खिदमत' का उद्घाटन, फ़ैमिली मुलाक़ातें

आज दिनांक 10 अक्तूबर, सोमवार को हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ के अमरीका के दौरे का पंद्रहवां दिन और बैतुर्रहमान, मैरीलैंड में दूसरा दिन था। हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने स्थानीय समय के अनुसार सुबह सवा छह बजे मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाकर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई।

दोपहर लगभग सवा एक बजे हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह से तशरीफ़ लाए और मस्जिद बैतुर्रहमान के क़रीब जमाअत द्वारा नई खरीदी गई गेस्ट हाउस का मुआइना फ़रमाया। इसके बाद हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ मजलिस ख़ुद्दामुल-अहमदिया अमेरिका के नए खरीदे गए दफ़्तर की बिल्डिंग के उद्घाटन के लिए तशरीफ़ ले गए। यह दफ़्तर मस्जिद बैतुर्रहमान के बिलकुल क़रीब ही स्थित है और इसका नाम हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने 'सराय-ए-खिदमत' रखा है। सराय-ए-खिदमत पहुंचकर सबसे पहले हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने बाहर यादगारी तख़्ती की नक़ाबकुशाई फ़रमाई और दुआ कराई। इसके बाद हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ दफ़्तर के अंदर तशरीफ़ ले गए और तमाम दफ़्तरों व कमरों का मुआइना फ़रमाया।

सराय-ए-खिदमत के उद्घाटन के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाए, जहाँ पहले से ही अहबाब अपने आक़ा की इमामत में नमाज़-ए-ज़ुहर व असर अदा करने के लिए मौजूद थे। अहबाब ने एक बजकर पैंतीस मिनट पर हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ की इमामत में नमाज़ अदा करने की सआदत प्राप्त की।

शाम छह बजे हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ दफ़्तर तशरीफ़ लाए और अहबाब के साथ मुलाक़ातों का सिलसिला शुरू हुआ। मुलाक़ात का शरफ़ पाने के लिए अहबाब कई-कई घंटे की दूरी तय कर मस्जिद पहुंचे हुए थे। हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने मुलाक़ात के लिए आए हुए बच्चों को चॉकलेट्स और तालिब-ए-इल्म को क़लम अता फ़रमाए। आज बारह जमाअतों से ताल्लुक़ रखने वाली 27 फैमिलीज़ के 121 अफ़राद को हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुलाक़ातों का सिलसिला रात 7 बजकर 55 मिनट तक जारी रहा, जिसके बाद हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ रात साढ़े आठ बजे मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाए और नमाज़-ए-मग़रिब व इशा पढ़ाई। सर्द मौसम के बावजूद अहबाब कई घंटे पहले से ही मस्जिद के बाहर कतारों में खड़े थे, ताकि मस्जिद के अंदर हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ की इमामत में नमाज़ अदा कर सकें।

अहबाब-ए-किराम से दुआ की दरख्वास्त है कि हज़रत नूरानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ की सेहत व सलामती के लिए दुआ करते रहें। अल्लाह तआला हर घड़ी हमारे प्यारे इमाम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ का हामी व नासिर हो। आमीन।

(सोलहवां दिन, 11 अक्टूबर 2022, मंगलवार)

घानाई राजदूत से मुलाकात, नए बैअतकर्ताओं के साथ विशेष बैठक और पारिवारिक व सामूहिक मुलाक़ातें

आज दिनांक 11 अक्टूबर मंगलवार को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के अमेरिका के दौरे का सोलहवां और सिल्वर स्प्रिंग, मेरीलैंड में तीसरा दिन था। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ स्थानीय समय के अनुसार सुबह सवा छह बजे मस्जिद बैतुर्रहमान पधारे और जमाअत के अज़ा को नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई।

लगभग ग्यारह बजे हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाए और घाना की अमेरिकी राजदूत हिज़ एक्सेलेंसी हाजिया अलीमा माहामा (H. E. Hajia Alima Mahama) को मुलाक़ात का सम्मान प्रदान किया। इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के साथ पारिवारिक मुलाक़ातें आरंभ हुईं। मुलाक़ातों के लिए दर्जनों परिवार लंबी दूरी तय करके अपने प्रिय आका से मिलने के लिए हाज़िर हुए थे। हज़ूर अनवर ने मुलाक़ात में आए छात्रों को स्नेहपूर्वक पेन और छोटे बच्चों को चॉकलेट्स प्रदान कीं। मुलाक़ात से बाहर आने वाले अज़ा के चेहरे उनकी भावनाओं को प्रकट कर रहे थे, क्योंकि उनमें से अधिकांश को जीवन में पहली बार ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुलाक़ातों के बाद पौने दो बजे हज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-जुहर व अस्र अदा करवाईं और फिर अपनी निवासगाह पधार गए। हालाँकि यह वर्क डे था, इसके बावजूद बड़ी संख्या में अज़ा अपने कामों और नौकरियों से छुट्टी लेकर अपने आका की ज़ियारत की ख़ातिर मस्जिद बैतुर्रहमान पहुँच चुके थे। आज सुबह 16 जमाअतों से संबंधित 32 परिवारों के 151 व्यक्तियों को हज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अमेरिका में पिछले चार वर्षों से फ़िदायान-ए-ख़िलाफ़त अपने आका के दीदार से महरूम थे। पिछले कुछ वर्षों में अनेक परिवार पाकिस्तान से अमेरिका स्थानांतरित हुए हैं। मुलाक़ात के लिए आवेदन करने वालों में से अधिकांश वे थे जिन्हें पहले कभी मुलाक़ात का अवसर नहीं मिला और उनकी सूची इतनी लंबी थी कि प्रशासन को सामूहिक मुलाक़ातों की व्यवस्था करनी पड़ी ताकि अधिक से अधिक अज़ा हज़ूर अनवर की संगत से लाभान्वित हो सकें। शाम लगभग छह बजे हज़रत अमीरुल मौमेनीन मस्जिद बैतुर्रहमान में ग्रुप मुलाक़ातों के लिए तशरीफ़ लाए। आज की सामूहिक मुलाक़ातों में लगभग 500 अज़ा को हज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सामूहिक मुलाक़ातों के बाद हज़ूर अनवर ने 46 नए बैअतकर्ताओं और ताबलीग़ से जुड़े अज़ा को मुलाक़ात का अवसर प्रदान किया। अहमदियत में नया क़दम रखने वाले इन अज़ा को हज़ूर अनवर ने चालीस मिनट का समय दिया। इस दौरान हज़ूर अनवर ने नए बैअतकर्ताओं से पूछा कि वे किस प्रकार इस्लाम अहमदियत में दाखिल हुए और उनके परिवारों की प्रतिक्रिया कैसी थी तथा उन्हें किन मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

ऑरलैंडो (Orlando) से संबंधित एक ताबलीग़ी दोस्त क्रिस्टोफर मेयर II (Christopher Meyer II) ने स्पष्ट हृदय के साथ विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया कि हज़ूर अनवर उनके हाथ पर बैअत ले लें, जिस पर हज़ूर अनवर ने पूछा कि उनकी वापसी कब है। उन्होंने अर्ज़ किया कि उनकी रवानगी कल दोपहर चार बजे है। उनकी यह दरख्वास्त हज़ूर अनवर ने क़बूल फरमाई। उनकी बैअत की रस्म उनकी रवानगी से पहले, कल जुहर व अस्र की नमाज़ के तुरंत बाद संपन्न होगी, जिससे सारे अज़ा जमाअत भी लाभान्वित होंगे, इंशा अल्लाह।

मुलाक़ातों के बाद हज़ूर अनवर ने पौने नौ बजे मस्जिद बैतुर्रहमान में अज़ा को नमाज़-ए-मग़रिब व इशा पढ़ाईं। आज शाम को अज़ा की उपस्थिति असाधारण थी। मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए लोग घंटों पहले ही लाइन में खड़े होना शुरू हो गए थे। प्रशासन ने आने वाले अज़ा की गाड़ियों के लिए तीन विभिन्न स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था की थी, जहाँ से शटल्स के माध्यम से अज़ा को मस्जिद पहुँचाया गया। मस्जिद परिसर में ओवरफ्लो टेंट भी लगाए गए थे जहाँ अधिक अज़ा के लिए नमाज़ अदा करने की व्यवस्था थी, लेकिन यह टेंट भी जल्द ही नमाज़ियों से भर गए।

(सत्रहवां दिन, 12 अक्टूबर 2022, बुधवार)

सिएरा लियोन के राजदूत से मुलाक़ात, पारिवारिक मुलाक़ातें, बैअत की रस्म और गुलशन वक़्फ़े नौ की क्लासेस

आज 12 अक्टूबर बुधवार को हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ के अमेरिका के दौरे का सत्रहवां दिन और सिल्वर स्प्रिंग शहर में चौथा दिन था। हज़ूर अनवर स्थानीय समय के अनुसार सुबह सवा छह बजे मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाए और अज़ा जमाअत को नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई।

सुबह 11 बजे हज़ूर अनवर मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाए। सबसे पहले आपने सिएरा लियोन के अमेरिकी राजदूत हिज़ एक्सेलेंसी सिद्दीक़ अबु बक्र वाई (H. E. Sidique Abou-Bakarr Wai) से दस मिनट की मुलाक़ात की। इसके बाद दस मिनट के लिए स्टोनी ब्रुक यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर शोबाना शंकर (Shobana Shankar) से भेंट की। फिर अमेरिका में गाम्बिया दूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी मिस्टर साइकू सीसे (Saikou Ceesay) को हज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर प्राप्त हुआ। इन विशिष्ट मेहमानों से मुलाक़ात के बाद लगभग साढ़े ग्यारह बजे से पारिवारिक मुलाक़ातों का सिलसिला आरंभ हुआ जो दोपहर डेढ़ बजे तक चला। आज मुलाक़ातों के दौरान 20 जमाअतों से संबंधित 36 परिवारों के 162 अज़ा को हज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बड़ी संख्या में अज़ा जो घंटों पहले ही नमाज़ के लिए इकट्ठा होना शुरू हो गए थे, उन्हें हज़ूर अनवर की इमामत में जुहर व अस्र की नमाज़ें मस्जिद बैतुर्रहमान में अदा करने की तौफ़ीक़ मिली। मस्जिद पूरी तरह भर जाने के बाद अज़ा ने ओवरफ्लो टेंटों में नमाज़ें अदा कीं।

कल नई बैअतकर्ताओं की बैठक में एक ताबलीग़ी दोस्त क्रिस्टोफर आर. मेयर II ने हज़ूर अनवर के हाथ पर बैअत करने की दरख्वास्त की थी जिसे हज़ूर ने स्नेहपूर्वक स्वीकार किया। आज जुहर व अस्र की नमाज़ों के बाद, लगभग दोपहर दो बजे, हज़रत अमीरुल मौमेनीन ने उक्त व्यक्ति और सभी उपस्थित अज़ा से बैअत ली, जिसके बाद आपने अज़ा को दुआ कराई। दुआ के दौरान मस्जिद के विभिन्न हिस्सों से अज़ा की सिसकियाँ दिलों पर गहरा असर कर रही थीं।

शाम 5 बजकर 55 मिनट पर हज़ूर अनवर अपनी निवासगाह से बाहर पधारे। हमेशा की तरह फ़िदायान-ए-ख़िलाफ़त बहुत देर से बाहर खड़े अपने प्यारे आका के दीदार का इंतज़ार कर रहे थे। जब हज़ूर अनवर मस्जिद परिसर में स्थित एमटीए अर्थ स्टेशन (MTA Earth Station) की ओर तशरीफ़ लाए तो नारे तकबीर की गूंज दफ़्तरों में बैठे अज़ा तक भी पहुँच रही थी। अर्थ स्टेशन में आपने मुख़र्रम चौधरी मुनीर साहब, डायरेक्टर एमटीए इंटरनैशनल मस्रूर टेलीपोर्ट नॉर्थ और साउथ अमेरिका से कुछ समय बातचीत की। फिर आपने पूरे टेलीपोर्ट का मुआइना किया और विभिन्न सिस्टम्स देखने के बाद प्रसन्नता व्यक्त की।

इसके बाद 6 बजकर 5 मिनट पर हज़ूर अनवर मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ़ लाए जहाँ पर 200 से अधिक वाक़िफ़ात-ए-नौ गुलशन वक़्फ़े नौ क्लास में भाग लेने के लिए अपने प्यारे आका का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थीं। क्लास की शुरुआत तिलावत-ए-क़ुरआन से हुई जिसे अज़ीज़ा फ़ायज़ा अनवर ने सुंदर आवाज़ में पेश किया और उसका उर्दू अनुवाद अज़ीज़ा अमना नूर शाह ने प्रस्तुत किया। इसके बाद हदीस-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इक्तिबास और नज़्म पेश की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 17 April 2025 Issue No. 16

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

गई।

वाक़िफ़ात से क्लास पूरी करने के बाद वाक़िफ़ीन-ए-नौ के साथ गुलशन वक़्फ़े नौ की क्लास हुई। इस क्लास में 209 वाक़िफ़ीन-ए-नौ (12 वर्ष या उससे अधिक उम्र के) को हज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तिलावत, हदीस, इक्तिबास और नज़्म के बाद हज़ूर अनवर ने वाक़िफ़ीन को सवाल-जवाब का अवसर दिया और सुनहरी नसीहतें फ़रमाईं। दोनों क्लासों में आपने वाक़िफ़ात और वाक़िफ़ीन नौ को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि सबको उर्दू भाषा सीखनी चाहिए ताकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों को सही समझ सकें। आपने यह भी फ़रमाया कि क़ुरआन की तिलावत और उसके अनुवाद की ओर विशेष ध्यान दें और आयात को याद करने की कोशिश करें।

गुलशन वक़्फ़े नौ क्लास के बाद हज़ूर अनवर साढ़े आठ बजे मस्जिद बैतुर्रहमान में नमाज़-ए-मग़रिब व इशा पढ़ाने के लिए तशरीफ़ लाए। जब भी हज़ूर मस्जिद से निवासगाह की ओर या वापसी पर तशरीफ़ ले जाते हैं तो छोटे-बड़े सभी अज़ा अपने प्यारे आका के दीदार के लिए रास्ते में खड़े हो जाते हैं। अक्सर अज़ा और बच्चे हाथ हिलाकर "अस्सलामु अलैकुम प्यारे हज़ूर" कहते हुए सुनाई देते हैं, जिसका उत्तर हज़ूर अनवर स्नेहपूर्वक हाथ हिलाकर देते हैं।

(18वां दिन, 13 अक्टूबर 2022, गुरुवार)

अज़ा की असाधारण उपस्थिति, पारिवारिक मुलाक़ातें आज दिनांक 13 अक्टूबर गुरुवार को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के अमेरिका दौरे का 18वां दिन और सिल्वर स्प्रिंग, मेरीलैंड में पाँचवां दिन था। हज़ूर अनवर स्थानीय समय अनुसार सुबह सवा छह बजे मस्जिद बैतुर्रहमान पधारे। मस्जिद अज़ा जमाअत से भरी हुई थी। सभी अज़ा को हज़ूर अनवर की इमामत में नमाज़-ए-फज्र अदा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ने जुहर व अस्र की नमाज़ें एक बजकर चालीस मिनट पर मस्जिद बैतुर्रहमान में अदा करवाईं। इसके पश्चात शाम छह बजकर पाँच मिनट पर पारिवारिक मुलाक़ातों का सिलसिला आरंभ हुआ जो लगभग आठ बजे तक चलता रहा। मुलाक़ात के लिए आवेदनकर्ताओं की संख्या बहुत अधिक थी, इसलिए हज़ूर अनवर से अपेक्षाकृत अधिक परिवारों की मुलाक़ात की दरख्वास्त की गई जिसे आपने स्वीकार फ़रमाया। आज 24 जमाअतों से संबंधित 49 परिवारों के 206 अज़ा ने हज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मस्जिद में जमाअत के लोग अपने आका के पीछे नमाज़-ए-मग़रिब व इशा अदा करने के लिए घंटों पहले से लाइन में लगना शुरू हो गए थे और अभी नमाज़ का समय शुरू भी नहीं हुआ था कि मस्जिद पूरी तरह भर गई। इसके बावजूद अज़ा की बहुत बड़ी संख्या स्थान न मिलने के कारण बाहर खड़ी रही। आज शाम सिल्वर स्प्रिंग में बारिश हो रही थी, इसलिए नमाज़ों के लिए हज़ूर अनवर मुलाक़ातों के पश्चात मस्जिद के अंदर से ही नमाज़ पढ़ाने के लिए पधारे और रात 8:40 बजे अज़ा को नमाज़ें पढ़ाईं। असाधारण उपस्थिति की संभावना थी, इसलिए कार्यकर्ताओं ने बाहर बड़ी मार्कियों का प्रबंध किया जहाँ बाकी सैंकड़ों लोगों ने नमाज़ें अदा कीं।

★ ★ ★

पृष 01 का शेष

नए-नए नियम गढ़ते हैं और अपने बनावटी तर्कों को सही समझते हैं, लेकिन खुदा तआला के सामने ये तर्क कोई मूल्य नहीं रखते। यदि कोई चाहे, तो बहाने के सहारे पूरी उम्र बैठकर नमाज़ पढ़ता रहे और रमज़ान के रोज़े कभी न रखे, लेकिन खुदा तआला उसके इरादों और नीयत को जानता है। जो व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी रखता है, खुदा तआला जानता है कि उसके दिल में दर्द है, और खुदा तआला उसे सवाब से भी अधिक इनाम देता है, क्योंकि दिल का दर्द एक अनमोल चीज़ है।

चालाक व्यक्ति अपने बहानों और तर्कों पर निर्भर रहते हैं, लेकिन खुदा तआला के सामने यह तर्क कोई मायने नहीं रखते। जब मैंने छह महीने तक रोज़े रखे थे, तो एक बार मुझे नबियों का एक समूह (कश्फ़ में) मिला। उन्होंने कहा, "तुमने अपने नफ्स को इतनी कठिनाई में क्यों डाला हुआ है? इससे बाहर निकलो।" इसी तरह जब कोई व्यक्ति खुदा तआला के लिए खुद को कठिनाइयों में डालता है, तो खुदा तआला स्वयं माता-पिता की तरह उस पर दया करके कहता है, "तुम क्यों इस कष्ट में पड़े हो?"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 563, मुद्रित क़ादियान 2003)

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad